Total Pages : 8

2641/P

II Year Arts Examination, 2016

SANSKRIT

Paper–I

(नाटक, छन्द एवं अलंकार)

Time : Three Hours

Maximum Marks : 100

PART - A (खण्ड-अ) [Marks : 20

Answer all questions (50 words each).

All questions carry equal marks.

सभी प्रश्न अनिवार्य हैं। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर पचास शब्दों से अधिक न हो।

सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

PART - B (खण्ड-ब) [Marks : 50

Answer *five* questions (250 words each).

Selecting *one* from each unit. All questions carry equal marks.

प्रत्येक इकाई से **एक-एक** प्रश्न चुनते हुए, कुल **पाँच** प्रश्न कीजिए।

प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 250 शब्दों से अधिक न हो।

सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

PART - C (खण्ड-स) [Marks : 30

Answer any *two* questions (300 words each).

All questions carry equal marks.

कोई **दो** प्रश्न कीजिए। प्रत्येक प्रश्न का उत्तर 300 शब्दों से अधिक न हो।

सभी प्रश्नों के अंक समान हैं।

खण्ड-अ

1. निम्न प्रश्नों के उत्तर संक्षेप में दीजिए :

(इकाई-I)

(i) अभिज्ञानशाकुन्तलम् का मंगलाचरण किस प्रकार का है?

(ii) अभिज्ञानशाकुन्तलम् के नायक व नायिका का नाम लिखिए।

(इकाई-II)

(iii) अभिज्ञानशाकुन्तलम् का प्रधान रस कौनसा है?

(iv) शकुन्तला के माता-पिता का नाम लिखिए।

(इकाई-III)

(v) शकुन्तला की अंगूठी किस स्थान पर गिरी थी?

(vi) शकुन्तला की प्रिय सखी कौन-कौन थी?

(इकाई-IV)

(vii) मन्दाक्रान्ता छन्द का लक्षण लिखिए।

(viii) उपजाति छन्द के प्रत्येक चरण में कितने वर्ण होते हैं एवं यह छन्द किन दो छन्दों के मिश्रण से बना है?

(इकाई-V)

(ix) अनुप्रास अलंकार का लक्षण लिखिए।

(x) अर्थान्तरन्यास अलंकार का लक्षण लिखिए।

खण्ड-ब

(इकाई-I)

2. निम्नलिखित श्लोक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

सरसिजमनुविद्धंशैवलेनापि रम्यं

मलिनमपि हिमांशोर्लक्ष्म लक्ष्मीं तनोति।

इयमधिकमनोज्ञा वल्कलेनापि तन्वी

किमिव हि मधुराणां मण्डनं नाकृतीनाम्।।

अथवा

अनाघ्रातं पुष्पं किसलयमलूनं कररुहै-

रनाविद्धं रत्नं मधु नवमनास्वादितरसम्।

अखण्डं पुण्यमानां फलमिव च तद्रूपमनघं

न जाने भोक्तारं कमिह समुपस्थास्यति विधिः।।

(इकाई-II)

3. निम्नलिखित श्लोक की सप्रसंग व्याख्या कीजिए :

पृष्टा जनेन समदु:खसुखेन बाला

नेयं न वक्ष्यति मनोगतमाधि हेतुम्।

दृष्टो निवृत्य बहुशोऽप्यनया सतृष्ण-

मत्रान्तरे श्रवणकातरतां गतोऽस्मि।।

अथवा

शुश्रूषस्व गुरुन् कुरु प्रियसखीवृत्तिं सपत्नीजने,

भर्तुर्विप्रकृताऽपि रोषणतया मा स्म प्रतीपं गम:।

भूयिष्ठं भव दक्षिणा परिजने भाग्येष्वनुत्सेकिनी

यान्त्येवं गृहिणीपदं युवतयो वामा: कुलस्याधय:।।

(इकाई-III)

4. निम्नलिखित श्लोक की संस्कृत में सप्रसंग व्याख्या कीजिए-

इदमुपनतमेवं रूपमक्लिष्टकान्ति

प्रथमपरिगृहीतं स्यान्न वेत्यव्यवस्यन्।

भ्रमर इव विभाते कुन्दमन्तस्तुषारं

न च खलु परिभोक्तुं नैवं शक्नोमि हातुम्।।

अथवा

प्रत्यादिष्ट विशेषमण्डनविधिवमिप्रकोष्ठार्पितं,

विभ्रत्काञ्चनमेकमेव वलयं श्वासोपरक्ताधर:।

चिन्ताजागरणप्रतान्तनयनस्तेजोगुणादात्मन:

संस्कारोल्लिखितो महामणिरिव क्षीणोऽपि नालक्ष्यते।।

(इकाई-IV)

5. निम्नलिखित में से किन्हीं दो छन्दों के लक्षण एवं उदाहरण लिखिए :

(i) आर्या

(ii) द्रुतविलम्बित

(iii) शिखरिणी

(iv) शार्दूलविक्रीडितम्

(इकाई-V)

6. निम्नलिखित में से किन्हीं दो अलंकारों के लक्षण एवं उदाहरण लिखिए :

(i) यमक

(ii) उत्प्रेक्षा

(iii) दृष्टान्त

(iv) व्यतिरेक

खण्ड-स

(इकाई-I)

7. दुष्यन्त या शाकुन्तला का चरित्र चित्रण कीजिए।

(इकाई-II)

8. महाकवि कालिदास की नाट्यकला का समीक्षात्मक वर्णन कीजिए।

(इकाई-III)

9. अभिानशाकुन्तलम् के कथानक का मूल स्त्रोत बताते हुए कालिदास द्वारा किए गए परिवर्तन का उल्लेख कीजिए।

(इकाई-IV)

10. निम्नलिखित छन्दों के गणनिर्देशपूर्वक लक्षण एवं उदाहरण लिखिए :

(i) मालिनी

(ii) वसन्ततिलका

(इकाई-V)

11. निम्नलिखित अलंकारों के लक्षण एवं उदाहरण लिखिए :

(i) रूपक

(ii) अतिशयोक्ति